# तुलसीदास के समाजिक और आर्थिक परिदृश्य पर एक अध्ययन

Pinki*

*Assistant Professor*
*Sanatan Dharam Mahila Mahavidyalaya, Hansi, Haryana, India*

***Email ID**: vikas.bhambu@gmail.com*

**Accepted**: 07.02.2023 **Published**: 01.03.2023

**मुख्य शब्दः** तुलसीदास, मान्यताएं और सामाजिक।

**शोध आलेख सार**

*तुलसीदास जी के समाजिक और आर्थिक परिदृश्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनका जीवन और लेखन काल छठी से सातवीं सदी के बीच था, जो मध्यकालीन भारत की एक महत्वपूर्ण युग की उत्पत्ति के समय में पड़ता है। तुलसीदास जी के समय में सामाजिक व्यवस्था बहुत संघर्षपूर्ण थी। भारत में वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था थी, जो समाज के विभिन्न वर्गों को अलग–अलग रखती थी। इसके अलावा, जाति आधारित अन्यता, अज्ञानता, भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता था। तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में सुधार के लिए लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने धर्म की महत्ता और धर्म के द्वारा समस्याओं का समाधान बताया। वे सभी लोगों को एक समान बनाने की बात करते थे और सभी को भगवान के सामने समान बनाने की महत्ता को समझाते थे।*

**पहचान निशान**

**Corresponding Author*

*© IJRTS Takshila Foundation, Pinki, All Rights Reserved.*

## भूमिका

तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका को भी स्पष्ट किया। उन्होंने महिलाओं के लिए अपनी रचनाओं में जगह दी और महिलाओं को समाज का हिस्सा बताया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के बारे में बताया और उन्हें समानता के साथ समझाया। उन्होंने भी स्त्री शिक्षा की महत्ता को बताया और महिलाओं के शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के साथ–साथ धार्मिक और आध्यात्मिक समस्याओं का भी समाधान बताया। उन्होंने धर्म के महत्त्व को बताया और लोगों को धार्मिक रूप से सही दिशा में चलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने भी अन्य धर्मों के बारे में जानने और समझने की महत्ता को बताया। तुलसीदास जी की रचनाओं में राजनीतिक भावनाएं भी प्रगट होती हैं। वे अपनी रचनाओं में अधिकतर समस्याओं के समाधान के लिए धर्म और धार्मिक तत्वों का उल्लेख करते हैं, लेकिन उन्होंने राजनीतिक भावनाओं को भी स्पष्ट किया।

तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में राज्य की महत्वपूर्ण भूमिका को भी स्पष्ट किया। उन्होंने राज्य की नीतियों के बारे में बताया और राज्य के समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए समाज की सहायता लेने की महत्ता को बताया।

तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए समाज के सभी वर्गों के बीच समझौते के लिए भी उत्साह प्रदर्शित किया। उन्होंने सभी वर्गों के बीच संवाद को महत्त्वपूर्ण बताया और उन्हें समानता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

**तुलसीदासजी की सामाजिक परिस्थितियां**

प्रयाग के पास चित्रकूट जिले में राजापुर नामक एक ग्राम है, वहाँ आत्माराम दूबे नामके एक प्रतिष्ठित सरयूपारीण ब्राह्मण रहते थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम हुलसी था। संवत 1554 की श्रावण शुकला सप्तमी के दिन अभुक्त मूल नक्षत्र में इन्हीं भाग्यवान दम्पति के यहाँ बारह महीने तक गर्भ में रहने के पश्चात् गोस्वामी जी का जन्म हुआ। बचपन इधर भगवान शंकरजी की प्रेरणा से रामशैल पर रहने वाले श्री अनन्तानन्द जी के प्रिय शिष्य श्रीनरहर्यानन्द जी ने इस बालक को ढूँढ़ निकाला और उसका नाम रामबोला रखा। उसे वे अयोध्या (उत्तर प्रदेश प्रान्त का एक जिला है।) ले गये और वहाँ संवत 1561 माघ शुक्ला पंचमी शुक्रवार को उसका यज्ञोपवीत–संस्कार कराया। बिना सिखाये ही बालक रामबोला ने गायत्री–मन्त्र का उच्चारण किया, जिसे देखकर सब लोग चकित हो गये। इसके बाद नरहरि स्वामी ने वैष्णवों के पाँच संस्कार करके रामबोला को राममन्त्र की दीक्षा दी और अयोध्याही में रहकर उन्हें विद्याध्ययन कराने लगे। बालक रामबोला की बुद्धी बड़ी प्रखर थी। एक बार गुरुमुख से जो सुन लेते थे, उन्हे वह कंठस्थ हो जाता था। वहाँ से कुछ दिन बाद गुरु–शिष्य दोनों करक्षेत्र पहुंचे। वहाँ श्रीनरहरी जी ने तुलसीदास को रामचरित सुनाया। कुछ दिन बाद वह काशी चले आये। काशी में शेषसनातन जी के पास रहकर तुलसीदास ने पन्द्रह वर्ष तक वेद–वेदाङ्ग का अध्ययन किया। इधर उनकी लोकवासना कुछ जागृत हो उठी और अपने विद्यागुरु से आज्ञा लेकर वे अपनी जन्मभूमि को लौट आये। वहाँ आकर उन्होंने देखा कि उनका परिवार सब नष्ट हो चुका है। उन्होंने विधिपूर्वक अपने पिता आदि का श्राद्ध किया और वहीं रहकर लोगों को भगवान राम की कथा सुनाने लगे।

**सन्यास**

संवत १५८३ ज्येष्ठ शुक्ला 13 गुरुवार को भारद्वाज गोत्र की एक सुन्दरी कन्या के साथ उनका विवाह हुआ और वे सुखपूर्वक अपनी नवविवाहिता वधू के साथ रहने लगे। एक बार उनकी स्त्री भाई के साथ अपने मायके चली गयी। पीछे–पीछे तुलसीदासजी भी वहाँ जा पहुँचे। उनकी पत्नी ने इसपर उन्हें बहुत धिक्कारा और कहा कि 'मेरे इस हाड़–मांस के शरीर में जितनी तुम्हारी आसक्ति है, उससे आधी भी यदि भगवान में होती तो तुम्हारा बेड़ा पार हो गया होता'।

तुलसीदासजी को ये शब्द लग गये। वे एक क्षण भी नहीं रुके, तुरंत वहाँ से चल दिये। वहाँ से चलकर तुलसीदासजी प्रयाग आये। वहाँ उन्होंने गृहस्थवेश का परित्याग कर साधुवेश ग्रहण किया। फिर तीर्थाटन करते हुये काशी पहुँचे। मानसरोवर के पास उन्हें काकभुशुण्डिजी के दर्शन हुए।

**श्रीराम से भेंट**

काशी में तुलसीदास जी रामकथा कहने लगे। वहाँ उन्हें एक दिन एक प्रेत मिला, जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बतलाया। हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास जी ने उनसे श्रीरघुनाथ जी का दर्शन कराने की प्राथना की। हनुमान जी ने कहा, 'तुम्हे चित्रकूट में रघुनाथ जी दर्शन होंगे।' इस पर तुलसीदास जी चित्रकूट की ओर चल पड़े।

चित्रकूट पहुँच कर राम घाट पर उन्होंने अपना आसन जमाया। एक दिन वे प्रदक्षिणा करने निकले थे। मार्ग में उन्हें श्रीराम के दर्शन हुए। उन्होंने देखा कि दो बड़े ही सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार होकर धनुष–बाण लिये जा रहे हैं। तुलसीदास जी उन्हें देख कर मुग्ध हो गये, परंतु उन्हें पहचान न सके। पीछे से हनुमान जी ने आकर उन्हें सारा भेद बताया तो वे बड़ा पश्चाताप करने लगे। हनुमान जी ने उन्हें सात्वना दी और कहा प्रातःकाल फिर दर्शन होंगे।

संवत 1607 की मौनी अमावस्या बुधवार के दिन उनके सामने भगवान श्रीराम पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बालक–रूप में तुलसीदास जी से कहा—– बाबा! हमें चन्दन दो। हनुमान जी ने सोचा, वे इस बार भी धोखा न खा जायें।

तुलसीदास जी उस अद्भुत छवि को निहार कर शरीर की सुधि भूल गये। भगवान ने अपने हाथ से चन्दन लेकर अपने तथा तुलसीदास जी के मस्तक पर लगाया और अन्तर्धान हो गये।

**संस्कृत में पद्य–रचना**

संवत 1628 में ये हनुमान जी की आज्ञा से अयोध्या की ओर चल पड़े। उन दिनो प्रयाग में माघ मेला था। वहाँ कुछ दिन वे ठहर गये। पर्व के छः दिन बाद एक वट–वृक्ष के नीचे उन्हें भारद्वाज और याज्ञवल्क्य मुनि के दर्शन हुए। वहाँ उस समय वही कथा हो रही थी, जो उन्होने सूकर–क्षेत्र में अपने गुरु से सुनी थी। वहाँ से ये काशी चले आये और वहाँ प्रह्लाद–घाट पर एक ब्राह्मण के घर निवास किया। वहाँ उनके अंदर कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ और वे संस्कृत में पद्य–रचना करने लगे। परंतु दिन में वे जितने पद्य रचते, रात्रि में वे सब लुप्त हो जाते। यह घटना रोज घटती। आठवें दिन तुलसीदास जी को स्वप्न आया। भगवान शंकर ने उन्हें आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में काव्य रचना करो। तुलसीदास जी की नींद उचट गयी।

वे उठ कर बैठ गये। उसी समय भगवान शिव और पार्वती उनके सामने प्रकट हुए। तुलसीदास जी ने उन्हें साष्टाङ्ग प्रणाम किया। शिव जी ने कहा– 'तुम अयोध्या में जाकर रहो और हिंदी में काव्य–रचना करो। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी कविता सामवेद के समान फलवती होगी।' इतना कह कर गौरीशंकर अन्तर्धान हो गये। तुलसीदास जी उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर काशी से अयोध्या चले आये।

**तुलसीदास कृत मुख्य ग्रंथ**

- ✓ रामचरितमानस / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ कवितावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ विनयावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ विनय पत्रिका / तुलसीदास (सम्पूर्ण)
- ✓ गीतावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ दोहावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ कवित्तरामायण / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ रामलला नहछू / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ बरवै रामायण / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ वैराग्य संदीपनी / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ रामाज्ञा / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ दोहावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ पार्वती–मंगल / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ श्रीकृष्ण गीतावली / तुलसीदास (लम्बी रचना)
- ✓ जानकी –मंगल / तुलसीदास (लम्बी रचना)

इसके अतिरिक्त रामसतसई, संकटमोचन, हनुमान बाहुक, रामनाम मणि, कोष मञ्जूषा, रामशलाका, 'हनुमान चालीसा आदि आपके ग्रंथ भी प्रसिद्ध हैं।

तुलसीदास के विषय में सुनते ही हमारे सामने सबसे पहले उस ग्रंथ का नाम आता है जो आज भारत के हर घर में पवित्रता के साथ रखा गया है। यह ग्रंथ आज भी पूज्यनीय है। इस ग्रंथ का नाम 'रामचरितमानस' है। तुलसीदास को अनेक प्रकार से हम याद कर सकते हैं भक्त के रूप में कवि के रूप में या फिर एक सामान्य मनुष्य जो गृहस्थ जीवन और सन्यास के अंतर्द्वंद में रह गया। कवि के रूप में इन्हें हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के रामभक्ति शाखा के अन्तर्गत रखा गया है।

**तुलसीदास के बारे में**

आज विभिन्न स्रोतों के उपलब्ध होने के कारण तुलसीदास के विषय में अनेक किवदंतियाँ और अनेक मिथक कथाएं फैल गई हैं। हम यहाँ बहुमान्य तथ्य की बात करेंगे। उनका जन्म 1511ई. को राजापुर गाँव में हुआ था। पिता आत्माराम दुबे और माता हुलसी देवी थी। कहा जाता है कि तुलसी के अभुक्तमूल नक्षत्र में पैदा होने के कारण उनके पिता ने उन्हें मुनिया नामक दासी को दे दिया था जिन्होंने उनका पालन–पोषण किया। गुरु नरहरिदास के सानिध्य में तुलसी भक्त बने। रत्नावली नामक स्त्री से तुलसी का विवाह हुआ और उसके कुछ वर्षों बाद ही तुलसी सन्यासी बन भ्रमण करने निकल जाते हैं। जिसके विषय में भी एक कथा है। जो अग्रलिखित है।

**तुलसी के सन्यास ग्रहण करने की कथा**

एक बार रत्नावली अपने मायके चली जाती हैं और तुलसीदास अकेले घर पर रहते हैं। तुलसीदास का मन नहीं लगता है और वे रत्नावली के पास जाने का निश्चय करते हैं। उस दिन जोरों की बारिश हो रही थी। रत्नावली का घर नदी के पार था। ऐसा कहा जाता है कि तुलसीदास उस बारिश में लाश पर तैरकर और बड़े ही कठिनाई से रत्नावली के पास पहुँचते हैं। इस पर रत्नावली बड़ी क्रोधित होती हैं और कहती हैं– ”लाज न आई आपको दौरे आएहु नाथ” और आगे कहती हैं कि जिस प्रकार इस अस्थि और चर्म के देह से प्रेम है वैसी रघुनाथ में हो तो जीवन धन्य हो जाए और तब से तुलसी राम में रम गए।

**तुलसीदास और रामायण**

तुलसीदास को सदा एक भक्त के रूप में देखा जाता रहा है। हम उस कवि की कल्पना क्यों नहीं कर पाते जिसने एक ऐसा काव्य लिखा जिसे आज घरों में पूजा जा रहा है। फादर कामिल बुल्के और ए.के. रामानुजन जैसे विद्वानों के रिसर्च ने रामायण के 300 रूपों की बात बताई है। इसके साथ ही इन विभिन्न पुस्तकों में कथावस्तु आदि का भी बदलाव हुआ है। आज अकादमिक जगत में तुलसीदास के रामचरितमानस की अत्यधिक प्रशंसा होती है। इस ग्रंथ के विषय में तो यहाँ तक कहा जाता है कि रामचरितमानस की एक–एक अर्धाली पर एक–एक पी.एच.डी. हो सकती है।

**तुलसीदास की अन्य रचनाएं**

सामान्यतः लोग तुलसीदास के रामचरितमानस को ही प्रमुख रचना मानते हैं परन्तु ऐसा नहीं है। तुलसी की अन्य रचनाएं भी इतनी ही बेहतरीन और भक्ति से परिपूर्ण हैं। जानकीमंगल दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, हनुमान चालीसा आदि इनकी अन्य रचनाएं हैं। कहा जाता है कि एक बार तुलसी बाँह की असहनीय पीड़ा से ग्रस्त थे और तब उन्होंने ‘हनुमान बाहुक’ की रचना की थी।

**तुलसी कवि और सामान्य मनुष्य**

तुलसीदास एक कवि के साथ–साथ सामान्य जीवन जीने वाले मनुष्य थे। उन्होंने जीवन में जो–जो कष्ट सहे उससे उनका जीवन और निखरता गया। उन्होंने अपने विषय में बताते हुए लिखा है कि वो माँगकर खाते थे और मस्जिद में सोते थे। साथ ही पाखण्डी समाज ने उनका लगभग बहिष्कार कर दिया था। रामचरितमानस को चोरी करवाने की तथा उसे नीचा दिखाने की भी खूब साजिश हुई थी। इस प्रकार के

अनेक कष्टों से उनका जीवन भरा हुआ था। उनके जीवन के अनेक कष्ट ही रामचरितमानस के मार्मिक पक्षों में उभरकर आए हैं।

**आधुनिक तुलसी**

हालाँकि अकादमिक जगत में ये एक बहस और शोध का मुद्दा आज भी बना हुआ है पर हम तुलसी के उन उक्तियों पर नजर डालें जिसमें वो कहते हैं "केहिं बिधि रचि नारि जग माँही, पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" या फिर अपने जाति के विषय में जब लिखते हैं कि 'तुम मुझे राजपूत, अवधूत जो चाहो कहो, मुझे किसी से अपने बेटे की शादी नहीं करानी है। मैं माँगकर खा लूँगा और मस्जिद में सोऊंगा'।

इन दोनों उक्तियों में ही हम पाते हैं कि एक तरफ तुलसी नारी की स्वतंत्रता और जाति–पाँति के खण्डन की बात भी कहते हैं। जहाँ तक बात एक चौपाई– 'ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' की बात आती है तो इस संदर्भ में अगर हम रामविलास शर्मा को पढ़ें तो हमें समझ आता है कि ये या तो क्षेपक जुड़ा है या अर्थ बदल दिया गया है।

इस प्रकार हम तुलसीदास के विभिन्न पहलुओं को देख सकते हैं। तुलसीदास आज भी चर्चा और शोध के विषय बने हैं। अतः उनके विषय में कोई भी तथ्य आखरी सत्य के रूप में हम इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। सन् 1623 ई. में तुलसीदास इस संसार को छोड़ देते हैं और हमारे लिए एक विरासत छोड़ जाते हैं। जिसे आज भारतीय जनमानस को सहेजने की जरूरत है।

तुलसीदास की पत्नी का नाम रत्नावली था। तुलसीदास का जन्म शुक्ल पक्ष की सप्तमी, चंद्र हिंदू कैलेंडर माह श्रावण (जुलाई–अगस्त) की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को हुआ था। यह ग्रेगोरियन कैलेंडर के मुताबिक 1 अगस्त 1511 है।

**उपसंहार**

इस तरह, तुलसीदास जी एक महान संत, कवि और समाज सुधारक थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे समाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान किया। उनकी रचनाओं में धर्म, सेवा, समझौता, समानता, समस्याओं का समाधान, स्त्री शिक्षा आदि के महत्वपूर्ण संदेश हैं। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समझौते को बढ़ावा दिया और समाज को समृद्ध, समानतापूर्ण और आदर्शवादी बनाने के लिए अपना योगदान दिया। उनके जीवन और रचनाओं से हम सभी को एक अध्यात्मिक आदर्श, समझौता और समानता की ओर जाने की प्रेरणा मिलती है।

**संदर्भ**


- तुलसी साहित्य में मार्मिक प्रसंगों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन– ओंकार नाथ सिंह, इंटरनैट।
- तुलसी चरित – रघुबर दास
- तुलसी चरित्र– रघुबीर सिंह

- तुलसी की जन्म भूमि– चन्द्रबली पाण्डे
- तुलसी नवमूल्यांकन– रामरत्न भटनागर– इलाहाबाद स्मृति प्रकाशन, 1971
- तुलसीदास एक मूल्यांकन– निरालाकृत– द्वारा रामानुज गिलड़ा, अतुल प्रकशन, कानपुर।
- तुलसीदास– दृष्टि–प्रति–दृष्टि– डॉ0 राजेन्द्र टोकी– हिमालय।
- तुलसी रसायन– डॉ0 भगीरथ मिश्र– साहित्य भवन, इलाहाबाद।
- बावन वैष्णवन की वार्ता– गोकुल नाथ।
- प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी– डॉ0 गजानन शर्मा।
- भक्ति रस बोधिनी– भक्तमाल पर प्रियादास की टीका।
- भविष्य पुराण– गीता प्रैस, गोरखपुर।
- नानापुराण निगमागम सम्मत रामचरित मानस– डॉ0 गनौरी महतो, 974 साकेत प्रकाशन गांधी
- मानस की महिलाएँ– रामानन्द शर्मा
- मूल गोसाईं चरित– वेणी माधव दास